D1M2L2

4 कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री

शंकरदयाल शर्मा

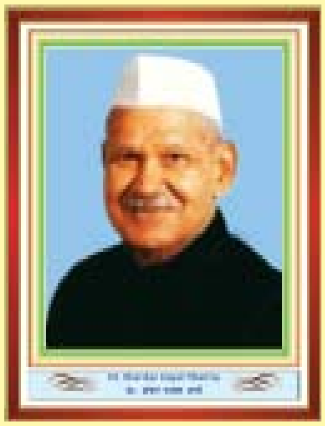

भारत के नौवें राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा का जन्म भोपाल (म.प्र.) में हुआ था। आपकी आरंभिक शिक्षा मध्यप्रदेश में हुई। आगे की पढ़ाई आपने क्रमशः आगरा, इलाहाबाद तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में की तथा एम.ए., एलएल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की, बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की और वहीं पर एक वर्ष तक प्रवक्ता रहे। तत्पश्चात् भारत लौटकर आप राजनीति में सक्रिय हुए। विधायक और सांसद के रूप में आरंभ हुई आपकी राजनीतिक यात्रा राज्यपाल, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर जाकर समाप्त हुई। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में आपने अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं – 'देशमणि', 'हमारे पथप्रदर्शक', 'प्रतिष्ठित भारतीय' तथा 'हमारे चिंतन की मूलधारा'।

'कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री' रेखाचित्र में लेखक शास्त्री जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं कि अपनी कर्मठता के गुण के कारण लालबहादुर शास्त्री एक अति सामान्य परिवार से उठकर देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे। वे कर्म को ही ईश्वर मानते थे। कर्म के प्रति अटल आस्था एवं संपूर्ण समर्पण उनके जीवन विकास का मूलाधार था।

इस इकाई में समाविष्ट मूल्य : समर्पण भावना, कर्तव्यनिष्ठा, कर्मठता, सेवा।

शास्त्री जी के नाम के साथ 'कर्मयोगी' विशेषण जोड़ना बिलकुल उपयुक्त है, क्योंकि मुझे तो उनका सारा जीवन ही कर्म से भरा हुआ मालूम पड़ता है। शास्त्री जी सामान्य परिवार से ऊपर उठकर देश के प्रधानमंत्री के जिस महत्त्वपूर्ण पद तक पहुँचे, उसका रहस्य उनके कर्मयोगी होने में ही छिपा हुआ है। वे उन लोगों में

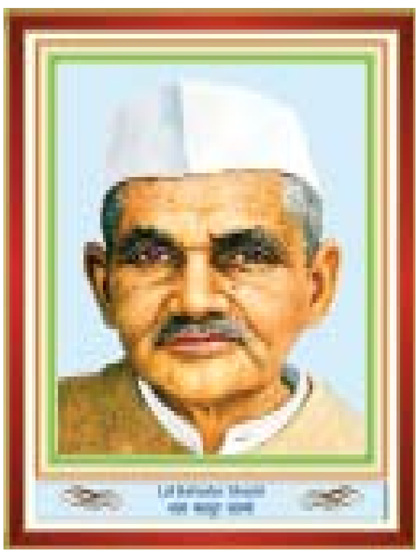

भी नहीं थे, जो भाग्य पर भरोसा करके बैठे रहते हैं और अचानक कभी सफलता मिल जाती है बल्कि वे उन लोगों में से थे, जिनको अपनी हथेली की लकीरों के बजाय अपने चिंतन और कर्म की शक्ति पर अधिक भरोसा होता है और वे क्रमशः अपने जीवन का रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं। शास्त्री जी के लिए कर्म ही ईश्वर था और इसके प्रति बिना किसी फल की आशा किए संपूर्ण भाव से समर्पित रहते थे। यहाँ तक कि जब भी उन्हें फल की प्राप्ति के अवसर मिले, तब भी उन्होंने उस ओर हमेशा उपेक्षित दृष्टि ही रखी। उनका जीवन-दर्शन 'गीता' के निष्काम कर्मयोगी का प्रतिरूप था। इसलिए मैं समझता हूँ कि उन्हें केवल कर्मयोगी के बजाय 'निष्काम कर्मयोगी' कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ आस्था, उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कर्म का भाव तथा उस कर्म के प्रति संपूर्ण समर्पण – ये तीन बातें – मुझे उनके संपूर्ण चरित्र तथा जीवन-दर्शन में दिखाई पड़ती हैं। अपने एक भाषण में उन्होंने इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए कहा था, ''यहाँ तक कि भले ही आप राजनीतिक क्षेत्र या सामाजिक क्षेत्र या किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करते हैं, यदि आप उसमें सफल होना चाहते हैं, अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह करना चाहते हैं, तो आपके कार्य और समर्पण तथा भक्ति और कर्म में समन्वय होना चाहिए।''

मैं शास्त्री जी की सफलता का रहस्य उनके इसी महत्त्वपूर्ण चिंतन में मानता हूँ। साथ ही यह भी मानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास का रहस्य इसी भक्ति और कर्म के सिद्धांत में निहित है।

शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। उनके ये गुण केवल उनके कार्यों और विचारों में ही अभिव्यक्ति नहीं पाते थे, बल्कि उनको देखने से ही इन सभी भावों का एहसास हो जाता था। उनके अपने व्यक्तित्व में विचारों का अनोखा समन्वय था। वे जो कुछ कहते थे, वही करते थे। जो कुछ भी करते थे, वह एकमात्र राष्ट्र-लाभ की भावना से प्रेरित होकर करते थे। मुझे लगता है कि यह उनके चरित्र की एक बहुत बड़ी विशेषता थी, जिसके कारण देशवासी उन पर इतना अधिक विश्वास करते थे और उन्हें चाहते भी थे। पंडित नेहरू की समृद्ध राजनीतिक विरासत को सँभालना और उसे आगे ले जाने का काम कम कठिन नहीं था। लेकिन देश ने उस समय यह साफ-साफ देखा कि उसे सँभालने की ताकत शास्त्री जी में ही है और शास्त्री जी ने अपने निर्मल चरित्र और दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा देश की इस आकांक्षा को पूरा किया।

शास्त्री जी की एक सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि ''वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचे, तब भी वह सामान्य ही बने रहे।'' विनम्रता, सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विशिष्ट प्रकार का आकर्षण पैदा करते थे । इस दृष्टि से शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था और कहना न होगा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कि बापू से प्रभावित होकर ही सन् 1921 में उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ी थी। शास्त्री जी पर भारतीय चिंतकों, डॉ. भगवानदास तथा बापू का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि वह जीवन-भर उन्हीं आदर्शों पर चलते रहे तथा औरों को इसके लिए प्रेरित करते रहे। शास्त्री जी के संबंध में मुझे बाइबिल की वह उक्ति बिलकुल सही जान पड़ती है कि विनम्र ही पृथ्वी के वारिस होंगे।

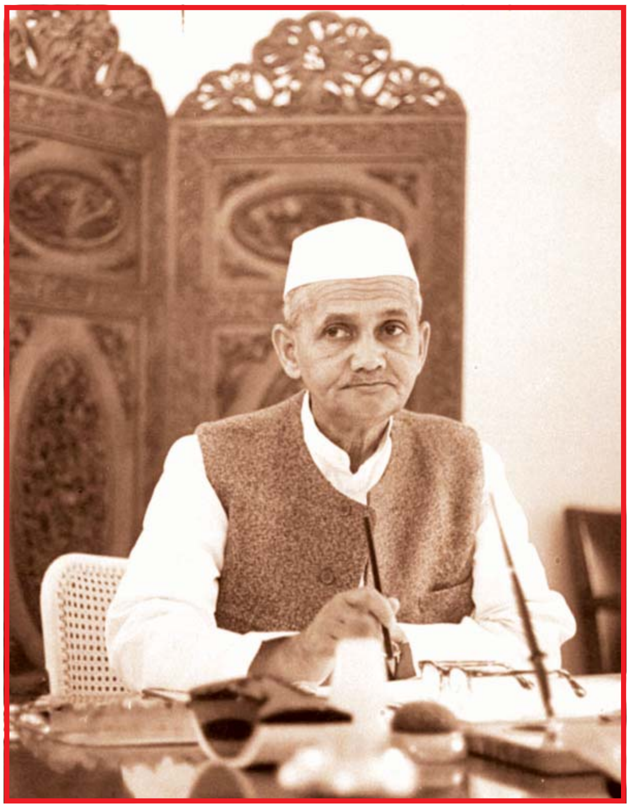

शास्त्री जी ने हमारे देश के स्वतंत्रता-संग्राम में तब प्रवेश किया था, जब वे एक स्कूल में विद्यार्थी थे और उस समय उनकी उम्र 17 वर्ष की थी। गाँधीजी के आह्वान पर वे स्कूल छोड़कर बाहर आ गए थे। इसके बाद काशी विद्यापीठ में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। उनका मन हमेशा देश की आज़ादी और सामाजिक कार्यों की ओर लगा रहा। परिणाम यह हुआ कि सन् 1926 में वे 'लोकसेवा मंडल' में शामिल हो गए, जिसके वे जीवन-भर सदस्य रहे। इसमें शामिल होने के बाद से शास्त्री जी ने गाँधी जी के विचारों के अनुरूप अछूतोद्धार के काम में अपने आपको लगाया। यहाँ से शास्त्री जी के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया। सन् 1930 में जब 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' शुरू हुआ, तो शास्त्री जी ने उसमें भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा। यहाँ से शास्त्री जी की जेल यात्रा की जो शुरुआत हुई तो वह सन् 1942 के, 'भारत छोड़ो' आंदोलन तक निरंतर चलती रही। इन 12 वर्षों के दौरान वे सात बार जेल गए। इसी से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके अंदर देश की आज़ादी के लिए कितनी बड़ी ललक थी। दूसरी जेल यात्रा उन्हें सन् 1932 में किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए करनी पड़ी। सन् 1942 की उनकी जेल यात्रा 3 वर्ष की थी, जो सबसे लंबी जेल यात्रा थी।

इस दौरान शास्त्री जी जहाँ एक ओर गाँधी जी द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यों में लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर पदाधिकारी के रूप में जनसेवा के कार्यों में भी लगे रहे। सन् 1935 में वे संयुक्त प्रांतीय काँग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए, इस पद पर वे 1938 तक रहे। किसानों के प्रति उनके मन में विशेष लगाव था। इसलिए उनको सन् 1936 में किसानों की दशा का अध्ययन करनेवाली एक कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। पूरी लगन के साथ काम करके उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें जमींदारी उन्मूलन पर विशेष जोर दिया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इसके बाद के 6 वर्षों तक वे इलाहाबाद की नगरपालिका से किसी-न-किसी रूप में जुड़े रहे। मैं समझता हूँ कि इस अनुभव ने भी शास्त्री जी के व्यक्तित्व और चिंतन को नागरिकों की समस्याओं से निकट से परिचित कराया। उनके पास ग्रामीण जीवन का अनुभव था। अब इसके साथ ही इलाहाबाद नगरपालिका ने जनसेवा का भी अनुभव जोड़ दिया था। लोकतंत्र की इस आधारभूत इकाई में कार्य करने के कारण वे देश की छोटी-छोटी समस्याओं और उनके निराकरण की व्यावहारिक प्रक्रिया से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। कार्य के प्रति निष्ठा और मेहनत करने की अदम्य क्षमता के कारण सन् 1937 में वे संयुक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के लिए निर्वाचित हुए। सही मायने में यहीं से शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरूआत हुई, जिसका समापन देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने में हुआ। शास्त्री जी को भारतीय राजनीति की इतनी सही और गहरी पकड़ थी कि श्रीमती इंदिरा गाँधी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते हुए कहा था कि, ''उन्हीं के मार्गदर्शन में मेरा राजनीतिक जीवन शुरू हुआ।''

देश की आज़ादी के बाद उत्तर प्रदेश तथा केन्द सरकार में शास्त्री जी भिन्न-भिन्न पदों पर रहे। उत्तर प्रदेश में उन्हें गृहमंत्री बनाया गया। बाद में पंडित नेहरू के अनुरोध पर वे केन्द्र में आ गए। केन्द्र में उन्होंने रेल और परिवहन, संचार, वाणिज्य, उद्योग और गृह जैसे महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों में मंत्री पद सँभाला। इन पदों पर रहते हुए शास्त्री जी ने अपनी जिस प्रशासकीय दक्षता का प्रमाण दिया, वह हमारे देश के लिए एक उदाहरण है। अपने मंत्रालयों के कार्यों में उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक तथा सभी प्रकार की औपचारिकताओं से परे होता था। वे अपने को कभी भी अपने पद के कारण ऊँचा नहीं मानते थे। उनकी बड़ी सीधी-सी धारणा थी कि वे जनता के शासक नहीं, बल्कि जनता के सेवक हैं। ऐसी भावना से कार्य करने के कारण उन्हें अपने मंत्रालय में तो लोकप्रियता मिली ही, साथ-ही-साथ सारे देश में भी लोकप्रियता मिली। इसी लोकप्रियता का परिणाम था कि पंडित नेहरू के निधन के बाद देश ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार किया। देश के इस महत्त्वपूर्ण पद पर रहते हुए केवल 19 महीने के छोटे-से-समय में उन्होंने जितनी सफलताएँ और लोकप्रियता प्राप्त की, वह एक उदाहरण हैं। शास्त्री जी के सामने अपना उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट था। उसमें किसी प्रकार का धुँधलापन या भटकाव नहीं था।

वे हमारे देश के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे और इन पदों पर रहते हुए स्वाभाविक रूप से वे अधिकार संपन्न भी थे। लेकिन उन्होंने हमेशा आत्मसंयम से काम लिया तथा अधिकारों से अधिक कर्तव्यों को तरजीह दी। शायद इसीलिए शास्त्री जी इतने अधिक लोकप्रिय भी हो सके। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षांत–समारोह में 19 दिसम्बर, 1964 को छात्रों को संबोधित करते हुए कुछ इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे, ''आपके भविष्य की मंजिल चाहे जो कुछ भी हो, आप में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि आप सबसे पहले देश के नागरिक हैं। यह आपको संविधान द्वारा प्रदत्त कुछ अधिकार देता है, लेकिन इससे कुछ कर्तव्यों का भी बोझ आता है, जिसे समझना चाहिए। हमारा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

देश प्रजातांत्रिक है, जो निजी स्वतंत्रता देता है, लेकिन इस स्वतंत्रता का उपयोग एक व्यवस्थित समाज के हित में स्वेच्छा से लगाए गए प्रतिबंधों के तहत होना चाहिए।'' अधिकार, कर्तव्य और आत्मसंयम के बारे में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात शास्त्री जी ने कही थी, जिसे आज याद रखने की ज़रूरत है।

शब्दार्थ

दायित्व जिम्मेदारी **निष्काम** बिना फल की अपेक्षा, अनासक्त **समर्पण** सौंपना, अर्पित होना **समन्वय** संयोग **निहित** भीतर रहा हुआ, अन्तर्गत **आस्था** श्रद्धा, विश्वास **विरासत** उत्तराधिकार, वारसो (गुज.) **आह्वान** ललकार, चुनौती **उन्मूलन** जड़मूल से नष्ट करना **दक्षता** निपुणता **तरजीह** प्राधान्य, अग्रिमता **प्रदत्त** दिया हुआ **निर्वाचित** चुना हुआ **दीक्षांत-समारोह** विश्व विद्यालयों का प्रमाणपत्र देने का उत्सव

अभ्यास

प्रश्न 1. (अ) कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ''शास्त्री जी को निष्काम कर्मयोगी कहना अधिक उचित है।''

(2) ''शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था।''

(3) ''शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है।''

प्रश्न 2. अगर महात्मा गाँधी आपके स्वप्न में आयें तो आप उनसे कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे? और महात्मा गाँधी क्या-क्या उत्तर देंगे? सोचिए और बताइए।

प्रश्न 3. संवाद को आगे बढ़ाइए (जिसमें कम से कम आठ से दस प्रश्न और जवाब हों) :

रिया : गाँधी जी का जन्म कब हुआ था?

सुनिल : गाँधी जी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 में हुआ था।

रिया : गाँधी जी ने उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?

सुनिल : गाँधी जी ने इंग्लैंड से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

रिया : ....

प्रश्न 4. निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से अनुलेखन कीजिए :

कोलकाता में हमारा घर एक शांत जगह पर है। हमारे बगीचे की दीवार के उस तरफ एक सँकरी सड़क है। यह सँकरी सड़क वन प्रांत पर जाकर खत्म होती है। इस सड़क के दोनों ओर मकान हैं और अधिक यातायात न होने से यह बहुत ही शांत रहती है। सारे दिन इसके आसपास गिलहरियाँ एक-दूसरे का पीछा करती हैं। हमारे आस-पास के पेड़ों पर अनेक प्रकार के पक्षी दिखाई पड़ते हैं। सारा दिन हवा में पक्षियों का संगीत तैरता रहता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

S7K3D7

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) शास्त्री जी ने देश की किस आकांक्षा को पूरा किया? कैसे?

(2) लालबहादुर शास्त्री पर गाँधी जी के आदर्शों का क्या प्रभाव पड़ा?

(3) शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरुआत कैसे हुई?

(4) छात्रों के दीक्षांत समारोह में शास्त्री जी ने कौन-से विचार व्यक्त किए?

प्रश्न 2. परिच्छेद में रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में से ढूँढ़कर उन्हें शब्दकोश के क्रम में लिखिए :

विद्‌यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्‌डी कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । विद्‌यार्थी काल में मानव में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं । इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है । यदि यह नींव दृढ़ बन जाती है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है । यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है, जिस वृक्ष को प्रारंभ से सुंदर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है । इस प्रकार विद्‌यार्थी काल में जो बालक श्रम, अनुशासन, संयम एवं नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्‌यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है।

प्रश्न 3. इस इकाई से हम लालबहादुर जी के जीवन में से कौन-कौन से सद्‌गुण ग्रहण कर सकते हैं?

प्रश्न 4. एक था शेर। उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था। जंगल के प्राणियों ने उनको सबक सिखाने की बात सोची। छोटी चींटी बोली, "मैं शेर का घमंड उतार दूँगी। ...."

अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाइए और बताइए कि चींटी ने शेर का घमंड कैसे उतारा होगा?

भाषा-सज्जता

हम इससे पहले अव्यय के बारे में समझ चुके हैं, अब इनके भेद के बारे में समझेंगे।

- **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :**

– भावेश कम बोलता है।

– साहिल झट-पट तैयार हो गया।

– सानिया प्रतिदिन कार्यालय जाती है।

– वंदना भीतर बैठी थी।

निर्देशित वाक्यों में रेखांकित शब्द अपने साथ आए क्रियापदों की विशेषता प्रकट कर रहे हैं।

'कम' शब्द क्रिया का परिमाण (मात्रा), 'झट-पट' शब्द क्रिया की रीति, 'प्रतिदिन' शब्द क्रिया के काल और 'भीतर' शब्द क्रिया के स्थान संबंधी विशेषता बताते हैं। अर्थात् वे 'क्रियाविशेषण अव्यय' है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताता है, उसे 'क्रियाविशेषण अव्यय' कहते हैं। जैसे : आज-कल, कल, साथ, ऊपर, नीचे, खूब, कम, अधिक वे 'क्रियाविशेषण अव्यय' है।

- निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :

– राम के साथ लक्ष्मण भी वन में गए।

– बगीचे **के चारों ओर** दीवार बनी हुई है।

– हमारे घर के आगे मस्जिद है।

– मनीषा मानसी से मधुर गाती है।

– आज साजिद की जगह वाजिद खेलेगा।

निर्देशित वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें तो स्पष्ट हो जाता है कि –

– ये सभी किसी न किसी संज्ञा के बाद प्रयुक्त हुए हैं।

– ये वाक्य में आए अन्य संज्ञा शब्दों से संबंध का बोध करा रहे हैं।

जैसे –

– **'के साथ'** : 'राम' और 'लक्ष्मण' का

– **'के चारों ओर'** : 'बगीचे' और 'दीवार' का

– **'के आगे'** : 'घर' और 'मस्जिद' का

– **'से मधुर'** : 'मनीषा' और 'मानसी' का

– **'की जगह'** : 'साजिद' और 'वाजिद' का

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त किए जाते हैं तथा अन्य संज्ञा, सर्वनाम या अन्य शब्दों के साथ संबंध का बोध कराते हैं वे 'संबंधबोधक अव्यय' हैं।

- निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :

– नुरोद्दीन, संजय और निलेश गांधीनगर गए।

– रमेश ने परिश्रम किया इसीलिए प्रथम आया।

– यद्यपि वह निर्धन है, तथापि उदार है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों या दो वाक्यांशों को जोड़ने का काम कर रहे हैं।

दो वाक्यों, वाक्यांशों अथवा शब्दों को परस्पर मिलानेवाले शब्द को 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहा जाता हैं। जैसे : और, तथा, किंतु, अथवा, इसीलिए आदि।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

■ **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**

- <u>अरे</u>! क्या बात करते हो।
- <u>हाय</u>! ये क्या हो गया?
- <u>वाह</u>! कितना सुन्दर बालक।
- <u>ठहर</u>! आगे मत बढ़।
- <u>बाप रे</u>! इतना लम्बा साँप।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द शोक, विस्मय, हर्ष, क्रोध, भय आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं।

जो शब्द विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, प्रशंसा, घृणा, शोक, भय आदि भावों को प्रकट करने के लिए हमारे मुख से स्वतः निकल पड़ते हैं, वे 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहे जाते हैं।

■ **निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय-छाँटिए :**

- आज मैंने बहुत कम खाना खाया।
- अंजली, सोनल के आगे बैठी है।
- मीनाक्षी और सालवी गाँव जा रही हैं।
- अरे! ये क्या कर रहे हो?

आपने जो 'अव्यय' छाँटे हैं, उनका प्रयोग करके अन्य वाक्य बनाइए।

योग्यता विस्तार

- 'मेरा प्रिय नेता' विषय पर निबंध लिखिए।
- राष्ट्रीय नेताओं के चित्र चार्ट पर चिपकाइए।
- ऐसे डाक टिकटों का संग्रह कीजिए जिनमें राष्ट्रीय नेता के चित्र हों।
- किसी राष्ट्रीय नेता के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाइए।
- 'नमक सत्याग्रह' और 'हिन्द छोड़ो' आंदोलन के बारे में सचित्र जानकारी प्राप्त कीजिए।
- महापुरुष और उनके नारों की सूची बनाइए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

- निम्नांकित कोष्ठक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दस अमर क्रांतिकारियों के नाम छिपे हैं। यदि आप अपनी बुद्धि से रिक्त स्थानों में सही अक्षर भर सके, तो वे नाम स्पष्ट हो जाएँगे। जरा उठाइए अपनी कलम और इस्तेमाल कीजिए अपनी बुद्धि का।

				रा									
				म									
		सा		प्र						मं			
		व		सा			चं		भ		त	सिं	ह
	मी		चं		श	चीं		सा	न्या				
जी		क		बि			शे			पां			
त		र		स्मि			ख			डे			
सिं	य	श	पां				र						
ह							आ						
							जा						
		ब	टु	के	श्व	र		त्त					

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in